(3) "जाग तुझको दूर जाना"

वज्र का उर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया?
दे किसे जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?
- जाग तुझको दूर जाना।

व्याख्या/भावार्थ - महादेवी वर्मा जी इंसान में बसे इस आत्मा से कहती है कि तुझमे असीम उत्साह और साहस भरा है। तेरा हृदय वज्र जैसा कठोर है जो कभी भी विचलित नहीं होता है। वह चारो ओर के आकर्षण से भी कभी विचलित नही हुआ। परन्तु आज वही तुम्हारा हृदय प्रेयसी के आँसुओ से विगलित हो गया अर्थात् तुम उससे पराजित हो गए। हे मनुष्य तुमने अपने मन को न टलाने वाले वो जीवन रूपी अमृत तत्व दे दिया और आसक्ति के मदिरा माँग लाये हो। तुम्हारे हृदय में संसार के अत्याचार, उत्पीड़न तथा शोषण के विरुद्ध भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ था किन्तु आज तुम अपने काल्पनिक सुख में मलय के सदृश सुगंधित तकिया रखकर सांसारिक आसक्ति में डूब रहे हो। इस प्रकार तो तुम निरंतर अपने जीवन के लक्ष्य से दूर हटते जा रहे हो। आज सार विश्व, अभिशाप की निद्रा में डूब सुख भोग रहा है। उसी अभिशाप में आज तुम भी मोहित हो रहे हो। तुम भी आलस्यता में डूबकर सो रहे हो। ये सांसारिक मोह तुम्हे विनाश के पथ की ओर लेजा रहा है। तू संसार की व्यथा को देखकर भी जाग्रत नहीं हो रहा है। इस प्रकार तू तो विपरीत आचरण कर मृत्यु को अपने हृदय में बसाना चाहता है। मृत्यु से पूर्व अपने लक्ष्य को स्मरण कर और अपने प्रिय प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ चल।

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तो तभी दृग में सजेगा आज पानी;
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी
है तुझे अंगार शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना
जाग तुझको दूर जाना।

भावार्थ - महादेवी वर्मा जी आत्मा को सम्बोधित करते हुए कहती है कि हे आत्मा तुम ठंडी साँसे न भरो और विरह व्यथा की कहानी भूल जाओ। निराशा पूर्वक अपने विरह गाथा को कहना मूर्खता है। जब तुम्हारे हृदय में आग अर्थात विरह ज्वाला होगी तभी उस ज्वाला से उत्पन्न आँसू तुम्हारे आँखो में सज्जित होंगे। तभी तुम्हारी प्रेम कथा में सार्थकता होगी और तुम्हारे हृदय को शक्ति प्रदान करेगी। प्रिय के वियोग की पीड़ा को लेकर अगर जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहकर परिस्थिति को अभिशाप मुक्त प्रदान करे और ऐसे करते हुए तुम्हारे प्राण पखेरू उड़ भी जाए तो यह तुम्हारे विजय की अमर कहानी होगी या बन जायेगी। यदि तुम अपनी साधना में हार भी गए, प्रिय प्राप्ति के मार्ग में मिट भी गए तो तुम्हारी जीत ही होगी क्योंकि ऐसा होने पर तू अपने प्रिय से मिल जाएगा। दीपक की लौ पर जल कर मिटने वाला पतंगा ही दीपक को सदा अमर बनाता है. जबकि दीपक पर पतंगा जलकर राख हो जाता है।

महादेवी वर्मा जी प्राणों को सम्बोधित करती हुई कहती है कि मेरे प्राण वज्र के समान कठोर और न विचलित होने वाले है। परन्तु वही हृदय तेरसी की आँसुओं में विगलित होने वाले है। इतना ही नहीं यह अज्ञानता में जीवन का अमृत्व देकर बदले में जीवन को नष्ट करने वाला पदार्थ मदिरा माँग लाया है। मलय पर्वत से आने वाली सुगंधित सुखदायी हवाओं में ये तड़िया रखकर सांसारिक आसक्तियों में डूब गया है। वह कहती है कि इन मोह पास तथा आसक्तियों में डूबकर तुम सिर्फ विनाश के गर्त में ही धँसते जाओगे। तुम्हे यह अपने मन में ठान लेना है कि मृत्यु से पूर्व ही तुम्हें अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचना है।

H.W. Q.1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता में कवयित्री हमें क्या संदेश दे रही है?

Q.2. महादेवी वर्मा जी का जीवन परिचय लिखिए तथा बताइए कि हिन्दी साहित्य में इनका क्या स्थान था?